परमेश्वर के प्रेम की विजय

"फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, "देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा। 4वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।"

(प्रकाशितवाक्य 21:3, 4)

महान विवाद, परमेश्वर की सरकार के विरुद्ध शैतान का विद्रोह, तेजी से समाप्त हो रहा है।

हमें इस बात से अनभिज्ञ नहीं रखा गया है कि संघर्ष कैसे समाप्त होगा: परमेश्वर जीतता है, शैतान हारता है।

यहाँ तक कि अंतिम लड़ाइयों का विवरण भी बाइबल में स्पष्ट रूप से वर्णित है।

- पीड़ा और छुटकारे का समय।
- आतंक और आनंद का समय।
- विनाश और न्याय का समय।
- जीवन और मृत्यु का समय।
- प्रेम करने और प्रेम पाने का समय।

पीड़ा और छुटकारे का समय

"हाय, हाय, वह दिन क्या ही भारी होगा! उसके समान और कोई दिन नहीं; वह याकूब के संकट का समय होगा; परन्तु वह उस से भी छुड़ाया जाएगा।" (यिर्मयाह 30:7)

"हम अंत के समय में जी रहे हैं। समय के तेजी से पूरे होने वाले संकेत घोषणा करते हैं कि मसीह का आगमन निकट है। जिन दिनों में हम रहते हैं वे गंभीर और महत्वपूर्ण हैं। (ई जी व्हाइट, गवाही I9, 11) ये घटनाएँ क्या होंगी?

प्रकाशितवाक्य 22:11

न्याय ख़त्म होता है और हर मामले का फैसला होता है। अनुग्रह का द्वार बंद हो जाता है।

यशायाह 8:21-22; यिर्मयाह 30:7

पीड़ा का समय। दुष्ट लोग नैतिक संयम के बिना कार्य करते हैं, और धर्मी लोग नहीं जानते कि उन्हें क्षमा किया गया है या नहीं।

प्रकाशितवाक्य 15:7-8; भजन संहिता 27:5

अंतिम 7 विपत्तियाँ पश्चाताप न करने वालों पर पड़ती हैं। परमेश्वर के लोगों की रक्षा और सुरक्षा की जाती है।

प्रकाशितवाक्य 16:14; 1 यूहन्ना 3:2-3

प्रत्येक समूह यीशु से मिलने की तैयारी करता है। कुछ उसके खिलाफ लड़ने के लिए; दूसरे लोग उसे खुशी से स्वीकार करने के लिए।

जब यीशु मध्यस्थता का अपना कार्य समाप्त कर लेगा और पवित्र आत्मा अपश्चातापी लोगों से हट जाएगा, तो प्रत्येक व्यक्ति का भाग्य सील कर दिया जाएगा। वफादारों को दिव्य सहायता और सुरक्षा मिलती रहेगी, जबकि दुष्ट शैतान की दया पर निर्भर रहेंगे। हर कोई अपने चरित्र से दिखाएगा कि उसने किसकी सेवा करने का निर्णय लिया है।

आतंक और आनंद का समय

"और पहाड़ों और चट्टानों से कहने लगे, "हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुँह से जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो।"
(प्रकाशितवाक्य 6:16)

उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था को अस्वीकार कर दिया है; उन्होंने जीवन के जल को अस्वीकार कर दिया है और अपने लिए "टूटे हुए हौद" खोद लिए हैं" (यिर्मयाह 2:13)।

अब उनका सामना न्यायाधीश से हुआ है। वे केवल क्रोध और निंदा की उम्मीद कर सकते हैं। उन्हें कौन मुक्त करेगा? (यशायाह 2:19; प्रकाशितवाक्य 6:16)।

"उस समय यह कहा जाएगा, "देखो, हमारा परमेश्वर यही है, हम इसी की बाट जोहते आए हैं, कि वह हमारा उद्धार करे। यहोवा यही है; हम उसकी बाट जोहते आए हैं। हम उससे उद्धार पाकर मगन और आनन्दित होंगे।" (यशायाह 25:9)

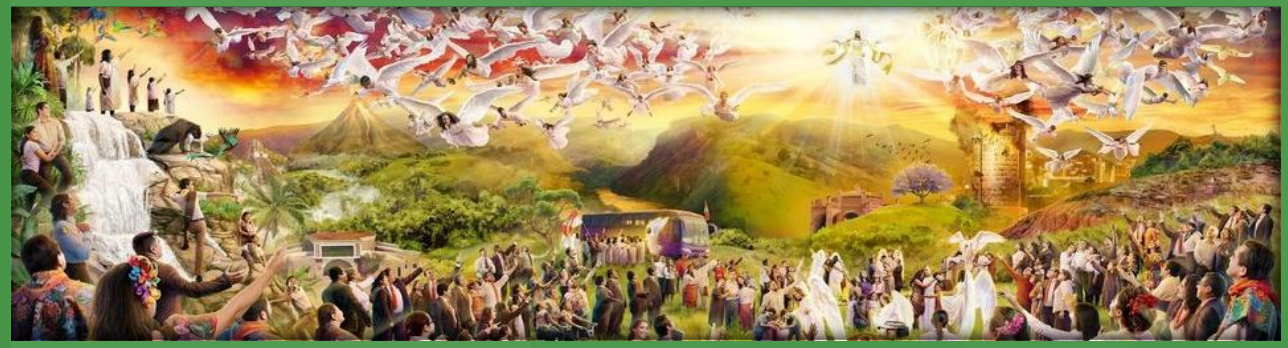

वे परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति वफादार रहे हैं; उन्होंने जीवन का जल पीया है (प्रकाशितवाक्य 21:6)। अब वे अपने न्यायाधीश को आमने-सामने देख सकते हैं। वे केवल उद्धार की आशा कर सकते हैं। वे प्रशंसा क्यों नहीं करेंगे? (यशायाह 25:9; प्रकाशितवाक्य 15:3-4)।

शैतान शेष लोगों से क्रोधित है (प्र.वा. 12:17)

- वह हर किसी से अपनी पूजा करवाता है और अपने नियमों का पालन कराता है (प्र.वा. 13:15-17)
  - दुनिया को मेमने के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार करता है (प्र.वा. 17:12-14)
    - यीशु अपने आगमन पर अपने सभी विरोधियों को नष्ट कर देता है (प्र.वा. 19:11-15)
- शेष लोग परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति वफादार रहते हैं (प्र.वा.14:12)
  - वे अपने परमेश्वर से मिलने के लिए तैयार हैं (आमोस 4:12)
    - यीशु उन लोगों को अपने साथ ले जाता है जो उस पर विश्वास करते थे (प्र.वा. 19:6-8)

विनाश का समय

"पृथ्वी शून्य और उजाड़ हो जाएगी; क्योंकि यहोवा ही ने यह कहा है।"
(यशायाह 24:3)

जब यीशु आएगा, तो सभी युगों के पवित्र जन पुनर्जीवित हो जायेंगे; और जीवित वफादार लोग, परिवर्तित होकर, यीशु के साथ स्वर्ग जाने के लिए उसके साथ चढ़ेंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17)।

दुष्ट यीशु की उपस्थिति में मर जायेंगे। उनकी लाशें दफन नहीं की जायेंगी और अंततः, पृथ्वी पर जीवन का कोई निशान नहीं बचेगा (यिर्मयाह 25:33; प्रकाशितवाक्य 19:17-21; यिर्मयाह 4:23-26; यशायाह 24:3)।

उस समय, शैतान और उसके स्वर्गदूत एक हजार वर्ष तक अथाह कुंड में बंद रहेंगे, और किसी को धोखा देने में असमर्थ रहें (प्रकाशितवाक्य 20:1-3)।

रसातल (*एबिसोस*, अंधेरे का स्थान), उस समय पृथ्वी पर स्थिति का पूरी तरह से वर्णन करता है। इसमें मानव जीवन के बिना, कोई भी दुष्ट आत्मा प्रलोभित नहीं करेगी। यह परिस्थितियों की श्रृंखला से बंधे विद्रोही स्वर्गदूतों के लिए चिंतन का समय होगा, जिनके पास उजाड़ पृथ्वी छोड़ने की संभावना नहीं होगी।

न्याय का समय

"फिर मैं ने सिंहासन देखे, और उन पर लोग बैठ गए, और उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया; [...] और वे जीवित होकर मसीह के साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करते रहे।"
(प्रकाशितवाक्य 20:4)

यदि न्याय का जश्न दूसरे आगमन से पहले मनाया गया था, और यीशु ने पहले ही सजा को निष्पादित कर दिया था, उन लोगों को शाश्वत जीवन दिया था जो उस पर विश्वास करते थे... इस नए न्याय का क्या मतलब है?

सदियों से, परमेश्वर ने अपना प्रेम दिखाया है और जो कोई भी इसे प्राप्त करना चाहता है उसे उद्धार प्रदान किया है। इसने बुराई को भी पूरी तरह विकसित होने दिया है

न्याय के दौरान, सभी संसार और वफादार स्वर्गदूत पाप और विद्रोह से निपटने में परमेश्वर के न्याय और दया को देख सके हैं। अब, उनके सामने शैतानी शासन का वास्तविक परिणाम है: एक खाली और उजाड़ भूमि।

लेकिन हममें से जो लोग संघर्ष के दौरान दुश्मन के क्षेत्र में रहे, अब छुटकारा पा चुके हैं, उन्हें भी परमेश्वर के न्याय और दया को देखने की आवश्यकता होगी। सहस्राब्दि न्याय में हम परमेश्वर के प्रेम के प्रति इतने पूर्णतः आश्वस्त हो जायेंगे कि बुराई फिर कभी नहीं उठेगी (नहेम्याह 1:9)।

जीवन और मृत्यु का समय

"क्योंकि देखो, वह धधकते भट्ठे का सा दिन आता है, जब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खूँटी बन जाएँगे; और उस आनेवाले दिन में वे ऐसे भस्म हो जाएँगे कि उनका पता तक न रहेगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।" (मलाकी 4:1)

"परन्तु तुम्हारे लिये जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे; और तुम निकलकर पाले हुए बछड़ों के समान कूदोगे और फाँदोगे।" (मलाकी 4:2)

सहस्राब्दी के अंत में, दुष्ट पुनर्जीवित किये जाते हैं। वे फिर से शैतान के निर्देश को स्वीकार करते हैं, और परमेश्वर और पवित्र लोगों के खिलाफ फिर से लड़ते हैं। कुछ भी नहीं बदला है, और सभी को आग से नष्ट कर दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:5-9)।

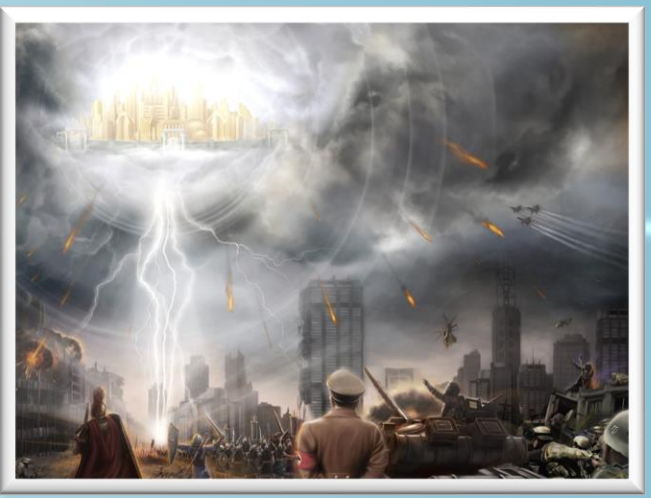

लेकिन उन्हें नष्ट करने से पहले अंतिम जाँच की जाती है। किताबें खोली जाती हैं, और हर कोई उनमें अपने कार्यों और पवित्र आत्मा की प्रेमपूर्ण पुकार को अस्वीकार करने को पहचानता है। सभी परमेश्वर के न्याय को स्वीकार करते हैं, और उसके सामने घुटने टेकते हैं (प्रकाशितवाक्य 20:11-13; यशायाह 45:23; फिलिप्पियों 2:10)।

अनंत काल तक जीवित रहने (अनंत काल तक दंडित होने के लिए) से दूर, वे एक "दूसरी मृत्यु" भुगतते हैं, जिससे कोई पुनरुत्थान नहीं होता है (प्र.वा. 20:14-15; भजन संहिता 37:20; मलाकि 4:1; यशायाह 26: 14)।

मृत्यु और पाप समाप्त हो गये। यह हर आँसू को पोंछने और शाश्वत और सुखी जीवन का आनंद लेने का समय है (प्रकाशितवाक्य 21:4)।

प्रेम करने और प्रेम पाने का समय

"यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है: मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है।" (यिर्मयाह 31:3)

और हम अनंत काल तक नई पृथ्वी पर क्या करेंगे?

मसीह का क्रूस अनंत काल तक उद्धार प्राप्त लोगों का विज्ञान और गीत होगा।

शांतिपूर्ण मैदानों पर, [...] जीवित जलधाराओं के किनारे, परमेश्वर के लोगों को एक घर मिलेगा

वहां अमर बुद्धि रचनात्मक शक्ति के चमत्कारों पर शाश्वत आनंद के साथ चिंतन करेगी

हर क्षमता का विकास किया जाएगा, हर क्षमता को बढ़ाया जाएगा

ज्ञान प्राप्त करने से न तो बुद्धि थकेगी और न ही शक्तियाँ थकेंगी

सबसे बड़े उपक्रमों को पूरा किया जा सकेगा, सबसे उत्कृष्ट आकांक्षाएँ संतुष्ट होंगी, सबसे उन्नत महत्वाकांक्षाएँ साकार होंगी।

पार करने के लिए नई ऊंचाइयां उभरेंगी, प्रशंसा करने के लिए नए चमत्कार, समझने के लिए नई सच्चाइयां, आत्मा, प्राण और देह की क्षमताओं को तेज करने वाले नए उद्देश्य सामने आएंगे।

वे परमेश्वर के कार्यों के चिंतन में सदियों से प्राप्त ज्ञान और समझ के खजाने को [पवित्र प्राणियों के साथ] साझा करेंगे।

स्पष्ट दृष्टि से, वे सृष्टि की महिमा पर विचार करते हैं: सूर्य और तारे और प्रणालियाँ, जो उन्हें सौंपे गए क्रम में, परमेश्वर के सिंहासन की परिक्रमा करती हैं

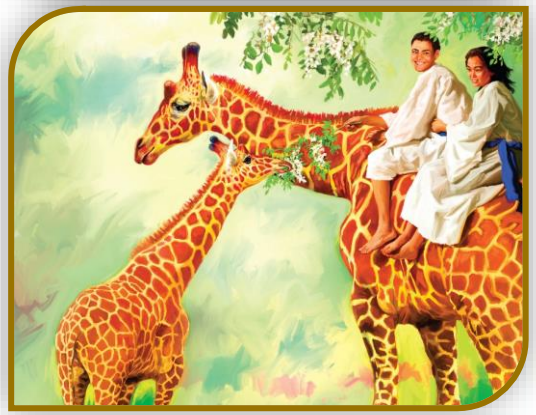

"महान विवाद" पृष्ठ 651-666-668-675-677-678 से लिया गया।

“महान विवाद ख़त्म हो गया। अब पाप और पापी नहीं रहे। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड स्वच्छ है। सद्भाव और ख़ुशी की एक लहर विशाल सृष्टि में धड़कती है। उससे जिसने सब कुछ बनाया, जीवन, प्रकाश और खुशी असीमित अंतरिक्ष के दायरे में प्रवाह करती है। सूक्ष्मतम परमाणु से लेकर महानतम संसार तक, सभी चीज़ें, सजीव और निर्जीव, अपनी छायाहीन सुंदरता और पूर्ण आनंद में, घोषणा करती हैं कि परमेश्वर प्रेम है।

ई जी व्हाइट (महान विवाद, पृष्ठ 678)